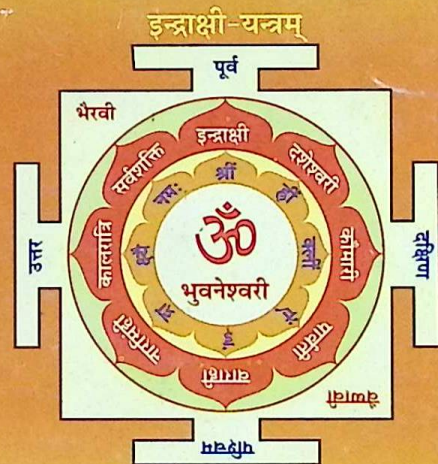


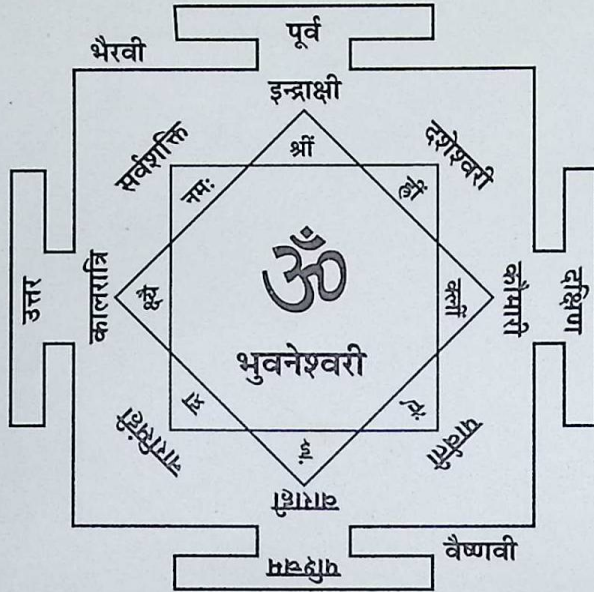
श्री इन्द्राक्षीस्तोत्र



प्रकाशक :

ॐ नाथ पुस्तक भण्डार
११४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

इन्द्राक्षी-यन्त्रम्



इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

भाषा टीका सहितम्

सम्पादकः

स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री

संस्थापकः-

वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल सांगवेद विद्यालय, नजफगढ़, नई दिल्ली-११००४३

ॐ नाथ पुस्तक भण्डार
११४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

प्रकाशकः

ॐ नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

दूरभाषः-२३२७५३४४

सम्पादक : स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री
ग्रा०-जहाँगीराबाद, जि०-बुलन्दशहर, उ०प्र०

सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

प्रथमावृत्ति : जनवरी, सन् २००७

मूल्य : रु० १५.००

डाक व्यय पृथक्

शिवनाथ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

प्रातः काल उठकर सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म के पश्चात् शुद्धवस्त्र धारण कर ऊन के आसन पर बैठकर, आचमन प्राणायामादि आत्मशुद्धि, आसनशुद्धि, शिखाबन्धन, दीप प्रज्वालन और स्वस्ति वाचनादि करके निम्नप्रकार से संकल्प करे ।

संकल्पः हरिः ॐ तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महा-
पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽहि द्वितीये
पराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे
जम्बूद्वीपे भूलोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैक-

देशे यमुनातटे इन्द्रप्रस्थे अमुकक्षेत्रे अमुकसंवत्सरे अमुकर्तौ अमुक
मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अद्य शुभपुण्यतिथौ
अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं ममात्मनः सपरिवारस्य ज्वराद्यनेकविध
आधिव्याधिसकलरोगविनाशार्थमायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं
श्रीइन्द्राक्षीदेवीप्रसादसिद्ध्यर्थं श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रकवचं मन्त्रजपञ्चाहं
करिष्ये ।

तत्पश्चात् दीपपूजनपूर्वक यथाशक्ति गणपत्यादि देवताओं का
पूजन कर श्रीइन्द्राक्षी देवी की मूर्ति, चित्र या यन्त्र में देवी का
आवाहन और स्थापन करें । यदि श्रीइन्द्राक्षीदेवी की सुवर्ण प्रतिमा हो
तो उसका अग्न्युत्तारण पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करें । यथाशक्ति श्रीसूक्त
से षोडशोपचार या यथालब्धोपचार पूजन कर निम्न प्रकार से
विनियोग एवं न्यास करे ।

विनियोगः ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। इन्द्राक्षी देवता। महालक्ष्मीर्बीजम्। भुवनेश्वरी शक्तिः। भवानीति कीलकम्। मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीइन्द्राक्षीवरप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः ॐ इन्द्राक्षीति अंगुष्ठाभ्यां नमः। (दोनों अँगूठों का स्पर्श)
ॐ महालक्ष्मीरिति तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों तर्जनीयों का स्पर्श)
ॐ माहेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः। (दोनों मध्यमाओं का स्पर्श)
ॐ अम्बुजाक्षीति अनामिकाभ्यां नमः। (दोनों अनामिकाओं का स्पर्श)
ॐ कात्यायनीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (दोनों कनिष्ठिकाओं का स्पर्श)
ॐ कौमारीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (दोनों करतलों व करपृष्ठों का स्पर्श)
हृदयन्यासः ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः। (दाहिने हाथ से हृदय स्पर्श)
ॐ महालक्ष्मीरिति शिरसे स्वाहा। (दाहिने हाथ से शिर का स्पर्श)

ॐ माहेश्वरीति शिखायै वषट् । (दाहिने हाथ से शिखा का स्पर्श)
ॐ अम्बुजाक्षीति कवचाय हुम् । (दाहिने हाथ से बायें कन्धे और बायें हाथ से दाहिने कन्धे का स्पर्श)

ॐ कात्यायनीति नेत्रत्रयाय वौषट् । (दाहिने हाथ की तर्जनी और अनामिका अँगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों तथा मध्यमा अँगुली से भ्रूमध्य का स्पर्श)

ॐ कौमारीति अस्त्राय फट् । (दाहिने हाथ की तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों को सिर के ऊपर लाठी या अस्त्र के समान घुमा कर बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें)

ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ हूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥

दिङ् नमस्कारः (पूर्वादि दिशाओं में नमस्कार करें) ॐ प्राच्यै दिशे
नमः । ॐ इन्द्राय नमः । (अग्नि कोण में) ॐ आग्नेय्यै दिशे नमः ।
ॐ अग्नये नमः । (दक्षिण दिशा में) ॐ याम्यायै दिशे नमः ।
ॐ यमाय नमः । (निर्ऋति कोण में) ॐ नैऋत्यै दिशे नमः ।
ॐ नैऋत्याय नमः । (पश्चिम दिशा में) ॐ प्रतीच्यै दिशे नमः ।
ॐ वरुणाय नमः । (वायव्य कोण में) ॐ वायव्यै दिशे नमः ।
ॐ वायवे नमः । (उत्तर दिशा में) ॐ उदीच्यै दिशे नमः ।
ॐ कुबेराय नमः । (ईशान कोण में) ॐ ईशान्यै दिशे नमः ।
ॐ ईश्वराय नमः । (ऊपर अन्तरिक्ष में) ॐ ऊर्ध्वायै दिशे नमः ।
ॐ ब्रह्मणे नमः । (भूमि के नीचे) ॐ अधरायै दिशे नमः ।
ॐ अनन्ताय नमः ॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजान्देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम् ।

वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥ १ ॥

इन्द्राक्षीं सहस्रयुवतीनानालंकारभूषिताम् ।

प्रसन्नवदनाम्भोजामप्सरोगणसेविताम् ॥ २ ॥

मन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥

इस मन्त्र का १०८ बार जप करें । तत्पश्चात् निम्नलिखित इन्द्राक्षी स्तोत्र का भावनामय होकर मध्यम स्वर से पाठ करें ।



इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहता ।

गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥ १ ॥

इन्द्र बोले- इन्द्राक्षी नाम की वह देवी है जो देवताओं के द्वारा बतायी गयी है । यह देवी गौरी शाकम्भरी, देवी, दुर्गा आदि अनेक नामों से प्रसिद्ध हुई है ॥ १ ॥

कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ।

सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥

और वह ही इन्द्राक्षी देवी कात्यायनी, महादेवी, चन्द्रघण्टा, महातपा

(महातपस्विनी), सावित्री, गायत्री (प्राणों की रक्षक), ब्रह्माणी (ब्रह्मरूपा),
ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मज्ञान देने वाली), आदि नामवाली है ॥ २ ॥

नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ।

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥ ३ ॥

नारायणी (लक्ष्मी), भद्रकाली (दुर्गा), रुद्राणी (पार्वती), कृष्णपिंगला
(कृष्ण और पिंगल नेत्रों वाली), अग्निज्वाला (अग्नि की ज्वाला के
समान तेजस्विनी), रौद्रमुखी (रुद्र के समान उग्रस्वभाव वाली), कालरात्रि
(महाकाली दुर्गा), तपस्विनी हैं ॥ ३ ॥

मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटांगी जलोदरी ।

महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ ४ ॥

वह देवी मेघश्यामा (मेघों के समान श्याम वर्ण वाली), सहस्राक्षी
(हजार नेत्रों वाली), विकटांगी (विकट अंगों वाली), जलोदरी (जलयुक्त

उदरवाली), महोदरी (बड़े उदर वाली), मुक्तकेशी (खुले बालों वाली),
घोररूपा (भयानक रूपवाली), महाबला (महान् बलवाली) है ॥ ४ ॥

अद्रिजा भद्रजा नन्दा रोगहन्त्रा शिवप्रिया ।

शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥ ५ ॥

वह देवी इन्द्राक्षी अद्रिजा (पर्वत पुत्री), भद्रजा (कल्याण स्वरूपा),
नन्दा (आनन्द देने वाली), रोगहन्त्रा (रोगों का नाश करने वाली),
शिवप्रिया (शिव की प्रिय), शिवदूती (शिवानुचरी), कराली (भयंकर
रूपवाली), प्रत्यक्षपरमेश्वरी (साक्षात् भगवती) है ॥ ५ ॥

इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिपरायणा ।

सदासम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ ६ ॥

वह इन्द्राणी (इन्द्र की पत्नी), इन्द्रस्वरूपा, इन्द्रशक्तिपरायणा
(इन्द्र की शक्ति से युक्त), सदा सम्मोहिनी देवी (सर्वदा मुग्ध करने

वाली), सुन्दरी (अनुपम सौन्दर्य से युक्त), भुवनेश्वरी (तीनों लोकों की स्वामिनी) है ॥ ६ ॥

एकाक्षरी परब्रह्म-स्थूल-सूक्ष्म-प्रवर्द्धिनी ।

वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥ ७ ॥

वह देवी एकाक्षरी (ॐ इस एकाक्षर से युक्त), परब्रह्म-स्थूल-सूक्ष्म-प्रवर्द्धिनी (परमेश्वर के स्थूलसूक्ष्म रूप को बढ़ाने वाली), वाराही, नारसिंही, भीमा, भैरवनादिनी नामों वाली है ॥ ७ ॥

श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।

अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ॥ ८ ॥

वही देवी श्रुति (वैदिक ज्ञान की देवी), स्मृति (स्मरण शक्ति देने वाली), धृति (धारणाशक्ति बढ़ाने वाली), मेधा (मेधा शक्ति देने वाली), विद्या (वैदिक और आध्यात्मिक ज्ञान देने वाली), लक्ष्मी (धन की

देवी), सरस्वती (विद्या की देवी), अनन्ता (अनन्त शक्ति सम्पन्न), विजया (विजय प्रदान करने वाली), पूर्णा (मनः कामना पूर्ण करने वाली), मानस्तोका (अभिमान को चूर करने वाली), अपराजिता (पराजय को दूर करने वाली) है ॥ ८ ॥

भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ।

शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिणी ॥ ९ ॥

भवानी, पार्वती, दुर्गा, हैमवती, अम्बिका, शिवा, शिवा (कल्याणकारिणी), भवानी, रुद्राणी और शंकरार्द्धशरीरिणी (शिव की अर्द्धांगिनी) है ॥ ९ ॥

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानवित्तयशोबलम् ॥ १० ॥

इन दिव्यनामपदों से बुद्धिमान् इन्द्र ने देवी इन्द्राक्षी की स्तुति की।

जिसके प्रभाव से आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य्य, ज्ञान, वित्त, यश और बल की प्राप्ति होती है ॥ १० ॥

शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।

आवर्तनं सहस्रन्तु लभते वाञ्छितं फलम् ॥ ११ ॥

इसकी सौ आवृत्ति (सौ बार जप) करने पर मनुष्य आधि-व्याधियों के बन्धन से मुक्त होता है, तथा सहस्र आवृत्ति (हजार बार जप) करने से मनोवाञ्छित फल पाता है ॥ ११ ॥

राजानं च समाप्नोति इन्द्राक्षीं नात्र संशयः ।

नाभिमात्रे जले स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया ॥ १२ ॥

जो नाभिमात्र जल में स्थित होकर इस स्तोत्र और मन्त्र का सहस्रसंख्या जप करता है वह राज्यपद और इन्द्राक्षी देवी को प्राप्त करता है इसमें कोई संशय नहीं है ॥ १२ ॥

जपेत्स्तोत्रमिदं मन्त्रं वाचासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।

सायं प्रातः पठेन्नित्यं षणमासैः सिद्धिरुच्यते ॥ १३ ॥

जो इस स्तोत्र का पाठ तथा मन्त्र का जप करता है उसे निश्चय ही वाक्सिद्धि होती है । नित्य सायं प्रातः छः मास तक पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है ॥ १३ ॥

संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये ।

अनेन विधिना भक्ता मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ १४ ॥

सर्वकामनाओं की सिद्धि के लिए एक संवत्सर उपासना करनी चाहिए । हे भक्तो ! इस विधि से जो उपासना करता है उसे मन्त्रसिद्धि हो जाती है ॥ १४ ॥

सन्तुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षं सम्प्रजायते ।

अष्टम्यां च चतुर्दश्यामिदं स्तोत्रं पठेन्नरः ॥ १५ ॥

और देवी सन्तुष्ट होकर साक्षात् प्रकट हो जाती है । अष्टमी चतुर्दशी
में जो व्यक्ति इस स्तोत्र का पाठ करता है ॥ १५ ॥

धावतस्तस्य नश्यन्ति विघ्नसंख्या न संशयः ।

कारागृहे यदा बद्धो मध्यरात्रौ तदा जपेत् ॥ १६ ॥

शीघ्र ही उसके विघ्न नष्ट हो जाते हैं इसमें कोई संशय नहीं है ।

जब कारागार में पड़ जाये तो मध्य रात्रि में इसका जप करे ॥ १६ ॥

दिवसत्रयमात्रेण मुच्यते नात्र संशयः ।

सकामो जपते स्तोत्रं मन्त्रपूजाविचारतः ॥ १७ ॥

केवल तीन दिन जप करने से मुक्त हो जाता है । इसमें कोई संशय
नहीं है । जो मन्त्र पूजा विचार पूर्वक कामना सहित जपता है ॥ १७ ॥

पंचाधिकैर्दशादित्यैरियं सिद्धिस्तु जायते ।

रक्तपुष्पै रक्तवस्त्रै रक्तचन्दनचर्चितैः ॥ १८ ॥

धूपदीपैश्च नैवेद्यैः प्रसन्ना भगवती भवेत् ।

एवं संपूज्य इन्द्राक्षीमिन्द्रेण परमात्मना ॥ १९ ॥

वरं लब्धं दितेः पुत्रा भगवत्याः प्रसादतः ॥ २० ॥

पन्द्रह दिन में उसे देवी इन्द्राक्षी सिद्ध हो जाती है । रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करने से भगवती प्रसन्न हो जाती है । इस प्रकार परमात्मा इन्द्र ने देवी इन्द्राक्षी की पूजा करके भगवती के प्रसाद से दिति के श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त किये ॥ १८-२० ॥

॥ श्रीमदिन्द्रोक्तमिन्द्राक्षीस्तोत्रं भाषाटीकासहितं सम्पूर्णम् ॥



अथ इन्द्राक्षीकवचम्

विनियोगः ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमहामन्त्रस्य शचीपुरन्दर ऋषिः।
अनुष्टुप्छन्दः। इन्द्राक्षीदुर्गा देवता। लक्ष्मीबीजम्। भुवनेश्वरी शक्तिः,
भवानीति कीलकम्, मम इन्द्राक्षीप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः ॐ इन्द्राक्षीति अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मीरिति
तर्जनीभ्यां नमः। ॐ माहेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अम्बुजा-
क्षीति अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ कौमारीति करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः । ॐ महालक्ष्मीरिति
शिरसे स्वाहा । ॐ माहेश्वरीति शिखायै वषट्। ॐ अम्बुजाक्षीति

कवचाय हुम् । ॐ कात्यायनीति नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ कौमारीति
अस्त्राय फट् । ॐ भूर्भुवस्स्वरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम् नेत्राणां दशभिश्शतैः परिवृतामत्युग्रचर्माम्बरो
हेमाभां महतीं विलम्बितशिखामामुक्तकेशान्विताम् ।
घण्टामण्डितपादपद्मयुगलां नागेन्द्रकुम्भस्तनी-
मिन्द्राक्षीं परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्तसिद्धिप्रदाम् ॥
इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम् ।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥
इन्द्रादिभिः सुरैर्वन्द्यां वन्दे शंकरवल्लभाम् ।
एवं ध्यात्वा महादेवीं जपेत् सर्वार्थसिद्ध्यये ॥
इन्द्राक्षीं नौमि युवतीं नानालंकारभूषिताम् ।
प्रसन्नवदनाम्भोजामप्सरोगणसेविताम् ॥

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षीं पूर्वतः पातु पात्वाग्नेय्यां दशेश्वरी ।
कौमारी दक्षिणे पातु नैऋत्यां पातु पार्वती ॥
वाराही पश्चिमे पातु वायव्ये नारसिंहपि ।
उदीच्यां कालरात्री मामैशान्यां सर्वशक्तयः ॥
भैरव्यूर्ध्वं सदा पातु पात्वधो वैष्णवी सदा ।
एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वांगं भुवनेश्वरी ॥

इस प्रकार उपर्युक्त विधि से विनियोग न्यास ध्यानादि करके
निम्नलिखित इन्द्राक्षी कवच का पाठ करें ।

इन्द्राक्षीकवचम्

ॐ नमो भगवत्यै इन्द्राक्ष्यै महालक्ष्म्यै सर्वजनवशंकर्यै
सर्वदुष्टग्रहस्तम्भिन्यै स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति पिंगलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मि त्रैलोक्य-मोहिनि
इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुंगस्तनि शूर्पहस्ते
कवाटवक्षःस्थले कपालधरे परशुधरे चापधरे विकृत-रूपधरे विकृतरूपे
महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि भस्मोद्धूलित-सर्वगात्रीन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने सिंहवाहने महिषासुर-
मर्दिन्युष्णज्वरपित्तज्वरश्लेष्मज्वरकफज्वरालापज्वरसंनिपात-
ज्वरकृत्रिमज्वरकृत्यादिज्वरैकाहिकज्वरद्वयाहिकज्वरत्रयाहिक-

ज्वरचतुराहिकज्वरपञ्चाहिकज्वरपक्षज्वरमासज्वरषणमासज्वर-
संवत्सरज्वरसर्वांगज्वरान् नाशय नाशय हर हर जहि जहि दह दह
पच पच ताडय ताडयाकर्षयाकर्षय विद्विषः स्तम्भय स्तम्भय मोहय
मोहयोच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने लम्बोष्ठी
कम्बुकण्ठके कलिकामरूपिणि परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रप्रभेदिनि
प्रतिपक्षविधवंसिनि परबलदुर्गाविमर्दिनी शत्रुकरच्छेदिनि सकल-
दुष्टज्वरनिवारिणि भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनी
डाकिनीकामिनीस्तम्भिनीमोहिनीवशंकरीकुक्षिरोगशिरोरोगनेत्ररोग-
क्षयापस्मारकुष्ठादिमहारोगनिवारिणि मम सर्वरोगान् नाशय नाशय
हां ह्रीं हुं है हौं हः हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ऐं श्रीं हुं दुं इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय,
जलरोगान् शोषय शोषय, दुःखव्याधीन् स्फोटय स्फोटय, क्रूरानरीन्

भञ्जय भञ्जय, मनोग्रन्थिप्राणग्रन्थिशिरोग्रन्थीन् काटय काटय, इन्द्राक्षि
मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरि महाचिन्तामणि दुर्गेसकल- सिद्धेश्वरि
सकलजनमनोहारिणि कालकालरात्र्यनलेऽजितेऽभये महाघोररूपे
विश्वरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूलकर्णशूलकटि-
शूलपक्षशूलपाण्डुरोगकमलादीन् नाशय नाशय वैष्णवी ब्रह्मास्त्रेण
विष्णुचक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासववज्रेण सर्वानरीन्
भञ्जय भञ्जय यक्षग्रहराक्षसग्रहस्कन्दग्रहविनायकग्रहबालग्रह-
चौरग्रहकूष्माण्डग्रहादीन् निगृह्य निगृह्य राजयक्ष्मक्षयरोगतापज्वर-
निवारिणि मम सर्वज्वरान् नाशय नाशय सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय
हुं फट् स्वाहा ।

॥ इन्द्राक्षीकवचं सम्पूर्णम् ॥



इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहता ।
गौरीं शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥ १ ॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपाः ।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णापिंगला ।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥ ३ ॥
मेघस्वना सहस्राक्षी विकटांगी जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ ४ ॥

अजिता भद्रदाऽऽनन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
 शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥ ५ ॥
 इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ।
 सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ ६ ॥
 एकाक्षरी परा ब्राह्मी स्थूलसूक्ष्मप्रवर्तिनी ।
 नित्यं सकलकल्याणी भोगमोक्षप्रदायिनी ॥ ७ ॥
 महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा सप्तमातृका ।
 वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥ ८ ॥
 श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।
 अनन्ता विजयापर्णा मानस्तोकापराजिता ॥ ९ ॥
 भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ।
 शिवा भवानी रुद्राणी शंकराब्धिशरीरिणी ॥ १० ॥

ऐरावतगजारूढा वज्रहस्ता वरप्रदा ।
 भ्रामरी काञ्चिकामाक्षी क्वणन्माणिक्यनू पुरा ॥ ११ ॥
 त्रिपाद्भस्मप्रहरणा त्रिशिरा रक्तलोचना ।
 शिवा च शिवरूपा च शिवभक्तिपरायणा ॥ १२ ॥
 मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोगनिवारिणी ।
 ऐन्द्री देवी सदा कालं शान्तिमाशु करोतु मे ॥ १३ ॥
 भस्मायुधाय विद्महे रक्तनेत्राय धीमहि ।
 तन्नो ज्वरहरः प्रचोदयात् ॥ १४ ॥
 एतत्स्तोत्रं जपेन्नित्यं सर्वव्याधिनिवारणम् ।
 रणे राजभये शौर्ये सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ १५ ॥
 एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।
 सा मे प्रीत्या सुखं दद्यात्सर्वापत्तिनिवारिणी ॥ १६ ॥

ज्वरं भूतज्वरं चैव शीतोष्णज्वरमेव च ।

ज्वरं ज्वरातिसारं च मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।

आवर्त्तयन् सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम् ॥ १७ ॥

एतत्स्तोत्रमिदं पुण्यं जपेदायुष्यवर्द्धनम् ।

विनाशाय च रोगाणामपमृत्युहराय च ॥ १८ ॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥



श्रीइन्द्राक्षी कवच सिद्ध करने की विधि

सिद्ध किये हुए मन्त्रों और स्तोत्रकवचादिकों का शीघ्र प्रभाव व आश्चर्यजनक फल प्राप्त होता है इसलिए सिद्ध मन्त्रादिकों का प्रयोग करना श्रेयस्कर है । इसी प्रकार इन्द्राक्षी कवच एवं स्तोत्र के सम्बन्ध में भी जानना चाहिए । परन्तु यदि इस कवच या स्तोत्र का किसी कारणवश तुरन्त ही प्रयोग करना पड़े तो निम्नलिखित श्रीविनायक स्तोत्र का पाठ उससे पहले कर लेना चाहिए । तब इन्द्राक्षी कवच एवं स्तोत्र पाठ करें -

श्रीविनायकस्तोत्रम्

मूषकवाहन मोदकहस्त चामरकर्ण विलम्बितसूत्र ।

वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायकपाद नमस्ते ॥

इन्द्राक्षीस्तोत्र, कवच और यन्त्र को सिद्ध करने के लिए चैत्र या आश्विन मास की नवरात्रि शुभ है । नवरात्रों में प्रतिदिन व्रत रखे । ताम्र पत्र खुदवा कर या भोजपत्र पर अष्टगन्ध^१ से निर्मित इन्द्राक्षी

१. देवी के लिए अष्टगन्ध की विधि इस प्रकार है-

चन्दनागरुकर्पूरं कुंकुमं रोचनं तथा ।

शिलारसो जटामांसी कर्चूरं चैकवृद्धितः॥ (दुर्गा०निर्णयसागरप्रैस, मुम्बई-पृ०१९)

अर्थात् चन्दन १ अंश, अगरु २ अंश, कर्पूर ३ अंश, कुंकुम ४ अंश, रोचन ५ अंश, शिलारस ६ अंश, जटामांसी ७ अंश और कर्चूर ८ अंश ।

चन्दनागरुकर्पूरं चोरकुंकुमरोचनाः ।

जटामांस्यथ कस्तूरी शक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः ॥ (पुरश्चर्याणव-पृ०२१४/पं०१६-१७)

अष्टगन्ध के अभाव में केवल लाल चन्दन से भी यन्त्र लिख सकते हैं।

यन्त्र में श्री इन्द्राक्षी देवी का विधिवत् पूजन करे ।^२ विनियोग न्यास-ध्यान सहित इन्द्राक्षी कवच का प्रतिदिन दश या एकादश पाठ करना चाहिए जिससे नव दिन में शत पाठ हो जाएँ। इसके साथ-२ इन्द्राक्षी देवी के मन्त्र ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं इन्द्राक्ष्यै नमः का रुद्राक्ष की माला से १००८ जप करना चाहिए । नवें दिन नवमी को पाठ और जप का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मणभोजन करना चाहिए । इस प्रकार मन्त्र और कवच शीघ्र प्रभावकारी हो जाता है । दशांश हवन में आहुति देते समय इन्द्राक्षी देवी के मन्त्र के अन्त में नमः के स्थान में स्वाहा शब्द जोड़ लेना चाहिये ।

अब सिद्ध इन्द्राक्षी कवच और यन्त्र के प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

२. विनियोग-न्यास-ध्यानादि विशेष विधि स्तोत्र और कवच के आरम्भ में दी गई है । वहाँ देखें ।

उपले (अर्थात् गाय के शुद्ध कण्डे या गोइठा) की पवित्र राख (भस्म) को कपड़छान करके किसी शुद्ध पात्र, जैसे थाली या परात आदि में फैला लें । तत्पश्चात् समान फैली हुई राख पर तुलसी की लेखनी से इन्द्राक्षी यन्त्र को लिख लें । उसे इन्द्राक्षी देवी' के मन्त्र और कवच से अभिमन्त्रित कर उस विभूति को आंखों में पीड़ा हो तो पलकों के ऊपर थोड़ी सी डालकर हाथों से तीन बार उसे नीचे की ओर झाड़ दिया जाय । ज्वर आदि अन्य व्याधियों में भी विभूति डालकर झाड़ देनी चाहिए । फिर रोगी तथा रोग का नाम लेकर देवी से प्रार्थना करें जिससे रोगी का रोग समूल नष्ट हो जाय । राख को चुटकी में लेकर देवी कवच पढ़ते जाइये और जहाँ जहाँ 'फट् स्वाहा' कवच में आये वहाँ वहाँ चुटकी की राख रोगी पर फेंकते जाइये । उसके बाद देवी का स्तोत्र पढ़िये थोड़ी-सी राख रोगी के शरीर पर

लगा दीजिये, अन्त में नमन करके विसर्जन कर दीजिये। सिद्धयन्त्र को विधिपूर्वक भोजपत्र पर अष्टगन्ध या लाल चन्दन से लिखकर रोगी के गले में धारण करा देना चाहिए । जब तक रोगी का रोग दूर न हो, तब तक प्रतिदिन रोगी को इन्द्राक्षी कवच से अभिमन्त्रित जल से अभिसिञ्चन करना चाहिए । इस प्रकार अभीष्ट सिद्धि के लिए विधिवत् सिद्ध किए कवच, यन्त्र और मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

स्तोत्र की फलश्रुति में बताया है कि इसका सौ बार पाठ करने से व्याधियों से मुक्ति मिलती है और हजार बार पाठ करने से मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति होती है । नित्य सायं प्रातः छः मास तक पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

॥ श्री इन्द्राक्षी कवच एवं स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥



देवी इन्द्राक्षी के ७१ नाम

- | | |
|----------------------|------------------------|
| १. इन्द्राक्ष्यै नमः | १०. सावित्र्यै नमः |
| २. गौर्यै नमः | ११. गायत्र्यै नमः |
| ३. शाकम्भर्यै नमः | १२. ब्रह्माण्यै नमः |
| ४. देव्यै नमः | १३. ब्रह्मवादिन्यै नमः |
| ४. दुर्गायै नमः | १४. नारायण्यै नमः |
| ६. कात्यायन्यै नमः | १४. भद्रकाल्यै नमः |
| ७. महादेव्यै नमः | १६. रुद्राण्यै नमः |
| ८. चन्द्रघण्टायै नमः | १७. कृष्णपिंगलायै नमः |
| ९. महातपायै नमः | १८. अग्निज्वालायै नमः |

१९. रौद्रमुख्यै नमः
२०. कालरात्र्यै नमः
२१. तपस्विन्यै नमः
२२. मेघश्यामायै नमः
२३. सहस्राक्ष्यै नमः
२४. विकटांग्यै नमः
२५. जलोदर्यै नमः
२६. महोदर्यै नमः
२७. मुक्तकेश्यै नमः
२८. घोररूपायै नमः
२९. महाबलायै नमः

३०. अद्रिजायै नमः
३१. भद्रजायै नमः
३२. नन्दायै नमः
३३. रोगहन्त्रायै नमः
३४. शिवप्रियायै नमः
३५. शिवदूत्यै नमः
३६. कराल्यै नमः
३७. प्रत्यक्षपरमेश्वर्यै नमः
३८. इन्द्राण्यै नमः
३९. इन्द्ररूपायै नमः
४०. इन्द्रशक्तिपरायणायै नमः

४१. सदासम्मोहिनी देव्यै नमः ५१. स्मृत्यै नमः
 ४२. सुन्दर्यै नमः ५२. धृत्यै नमः
 ४३. भुवनेश्वर्यै नमः ५३. मेधायै नमः
 ४४. एकाक्षर्यै नमः ५४. विद्यायै नमः
 ४५. परब्रह्मस्थूलसूक्ष्मप्रवर्द्धिन्यै ५५. लक्ष्म्यै नमः
 नमः ५६. सरस्वत्यै नमः
 ४६. वाराह्यै नमः ५७. अनन्तायै नमः
 ४७. नारसिंह्यै नमः ५८. विजयायै नमः
 ४८. भीमायै नमः ५९. पूर्णायै नमः
 ४९. भैरवनादिन्यै नमः ६०. मानस्तोकायै नमः
 ५०. श्रुत्यै नमः ६१. अपराजितायै नमः

६२. भवान्यै नमः

६३. पार्वत्यै नमः

६४. दुर्गायै नमः

६५. हैमवत्यै नमः

६६. अम्बिकायै नमः

६७. शिवायै नमः

६८. शिवायै नमः

६९. भवान्यै नमः

७०. रुद्रायै नमः

७१. शंकरार्द्धशरीरिण्यै नमः

॥ देवी इन्द्राक्षी की ७१ नामावली सम्पूर्ण ॥



अथ कमलाकवचम्

विनियोगः अस्याश्चतुरक्षरी विष्णुवल्लभायाः कवचस्य भगवान्
ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वाग्भवीशक्तिर्देवता वाग्भवं बीजं लज्जा रमा
कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्य-कवित्व-
सर्वसिद्धिसमृद्धये विनियोगः।

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम् ।

यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥ १ ॥

नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः ।

स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रविशारदः ॥ २ ॥

विद्यार्थिनां सदा विद्याधनदातृविशेषतः ।
धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा ॥ ३ ॥
ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा ।
हीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी ॥ ४ ॥
जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि ।
ओष्ठाधरे दन्तपङ्क्तौ तालुमूले हनौ पुनः ॥ ५ ॥
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः विष्णुरूपिणी ॥ ६ ॥
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती ।
हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ॥ ७ ॥
पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ।
उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः ॥ ८ ॥

जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिकेऽङ्गुलिमूलके ।
 स्वाधातुप्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके पुनः ॥ ९ ॥
 विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ।
 सर्वाङ्गे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती ॥ १० ॥
 तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदावतु ।
 ऋद्धिः पातु महादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ॥ ११ ॥
 वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी ।
 रमा पातु सदा देवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ॥ १२ ॥
 सर्वाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी ।
 शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ॥ १३ ॥

भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु ।
 त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु ॥ १४ ॥
 पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु ।
 नवदुर्गा सदा पातु कामाक्षी सर्वदाऽवतु ॥ १५ ॥
 योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ।
 मात्रा पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः ॥ १६ ॥
 सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ।
 पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥ १७ ॥
 इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये ।
 यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥ १८ ॥

शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरी ।
 न्यूनांगे चातिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन ॥ १९ ॥
 न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत् ।
 कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्तिपराय च ॥ २० ॥
 वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम् ।
 निजशिष्याय शान्ताय धनिने ज्ञानिने तथा ॥ २१ ॥
 दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ।
 शनौ मंगलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा ॥ २२ ॥
 यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ।
 विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयंभुकुसुमैः शुभैः ॥ २३ ॥

स्वशुक्रः परशुक्रैर्वा नानागन्धसमन्वितैः ।
 गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ॥ २४ ॥
 सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने ।
 अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फल्गुन्यां वा मघासु च ॥ २५ ॥
 पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे ।
 विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे च सुरालये ॥ २६ ॥
 आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः ।
 इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्र योगे तथैव च ॥ २७ ॥
 कौलके बालके चैव वणिजे चैव सत्तमः ।
 शून्यागारे श्मशाने च विजने च विशेषतः ॥ २८ ॥

कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम् ।

मत्स्यैर्मांसैः शाकसूपैः पूजयेत्परदेवताम् ॥ २९ ॥

घृताद्यैः सोपकरणैः पूपसूपैर्विशेषतः ।

ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥ ३० ॥

अखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम् ।

तदाधरेन्महाविद्यां शंकरेण प्रभाषिताम् ॥ ३१ ॥

मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः ।

स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥ ३२ ॥

गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया ।

अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥ ३३ ॥

पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा
जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम् ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र-
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥ ३४ ॥

॥ इति विश्वसारतन्त्रे कमलात्मिका कवचम् ॥



श्रीलक्ष्मी जी की आरती

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसि दिन सेवत हर विष्णु धाता ॥ १ ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तू ही जगमाता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ २ ॥

दुर्गारूप निरंजनि सुख सम्पत्ति दाता ।
जो भी तुमको ध्याता ऋद्धि सिद्धि पाता ॥ ३ ॥

तू ही है पातालवसन्ती तू ही सुख दाता ।
कर्मप्रभावप्रकाशिनि भवनिधि की त्राता ॥ ४ ॥

जिस घर थारो वासो तेहि में गुण आता ।
 करन सके कोई करले मन नहीं धड़काता ॥ ५ ॥
 तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होई राता ।
 खान पान को वैभव तुम बिन कोई दाता ॥ ६ ॥
 शुभ गुण सुन्दर युक्ति क्षीरो निधि जाता ।
 रत्न चतुर्दश तो कूँ कोई नहीं पाता ॥ ७ ॥
 श्रीलक्ष्मी की आरति जो कोई नर गाता ।
 उर आनन्द उमंगे पाप उतर जाता ॥ ८ ॥
 जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
 तुमको निसि दिन सेवत हर विष्णु धाता ॥



श्रीसूक्त

लक्ष्मीसूक्त-पुरुषसूक्त-हिन्दी अनुवाद सहित

दरिद्रता और दीनता व हीन जीवन से छूटने के लिये ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिये मंत्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़) ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मंत्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयंत्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तके में सम्मिलित कर दिये गये हैं, जिनका नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मूल्य: रु० ३०.००

डाक व्यय अलग

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

मंत्र रामायण

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे-चौपाईयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया गया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

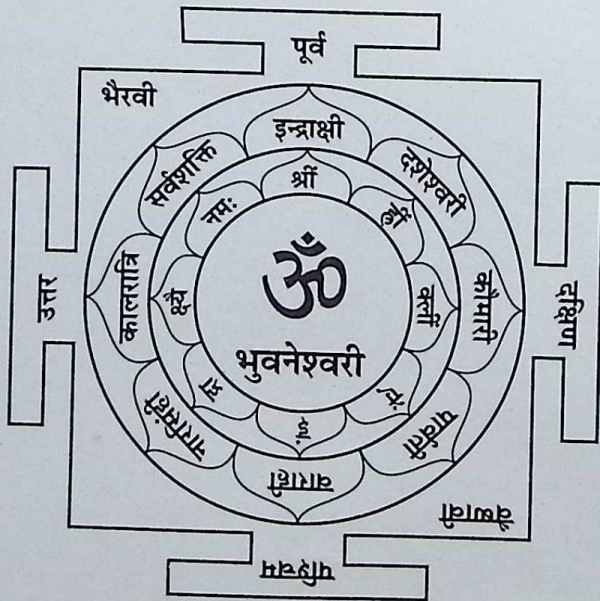


प्रकाशक - हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६, दूरभाष: २३२७५३४४

इन्द्राक्षी-यन्त्रम्



हिन्दी पंचांग तिथि निर्णय™ (बहुगुणी)

ए
व
म

पंडित पंचांग (दो रंगों में छपा)

दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

❀ मुख्यतः तारीख ❀ तिथि का समय कब से कब तक ❀ विक्रम-शाका व राष्ट्रीय सम्वत् ❀ अमुक व्रत, त्यौहार, कथा-कब और कैसे मनायें ❀ छुट्टियाँ ❀ नक्षत्र-राशि प्रवेश ❀ प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति ❀ चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त ❀ विवाह आदि मुहूर्त ❀ पंचक ❀ मूल ❀ भद्रा ❀ शुभ-अशुभ योग ❀ सूर्य-चन्द्र ग्रहण, कुम्भ की जानकारी ❀ ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-तंत्र उपाय ❀ राशि ज्ञान-फल, शुभ वार, शुभ रंग, शुभ अंक सहित ❀ राशि रत्न धारण विधि ❀ दिन-रात का चौघड़िया ❀ पन्द्रह के यंत्र से शुभ-अशुभ ज्ञान ❀ लाभ-हानि चक्र ❀ राहु (नेष्ट) काल-किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ❀ अभिजित काल-अमुक दिन शुभ मुहूर्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें ❀ दिशाशूल दोष परिहार-यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें ❀ दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक ❀ मौसम ❀ तेजी-मंदी/मार्किट रुख ❀ विश्व घटना चक्र ❀ देवी-देवताओं के बहुगुणी चित्र व उनके जपनीय मंत्र ❀ गीतासार ❀ भगवान राधा-कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित हैं।

साईज 28 × 44 से० मी०

पृष्ठ संख्या 26

मूल्य : रु. २५.००
: रु. १५.००

सन् १८९९ पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : पूजा-पाठ व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता



नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २३ २७ ५३ ४४